पुस्तक समीक्षा

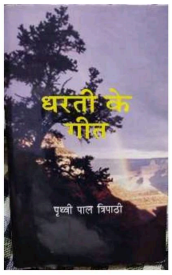

पुस्तक का नाम– धरती के गीत

लेखक– पं0 पृथ्वी पाल त्रिपाठी
प्रकाशन – मां प्रकाशन, दहेंव, बालवरगंज, जौनपुर
संस्करण– प्रथम
पुस्तक में कुल पृष्ठों की संख्या– 80 पृष्ठ

कवि वह है जो अपने पूरे जीवन को कविता की डोर में पिरो दे। हर पल को एक पंक्ति मानकर हर दिन नई कविता के प्रतिमान को पूरा करे। जीवन के विभिन्न झंझावातों को छन्दों, गीतों के स्वरों में जीवन रूपी यात्रा में गुंजायमान करता रहे। सुखों को जीवन का अमूल्य पल न मानकर समत्व के भाव से अभिभूत हो। मन के निजी भावनाओं को अपनी सीधी सादी भाषा में जनमानस के उर में उतार दे, वहीं कवि है।

प्रस्तुत समीक्षा एक ऐसे ग्रामीणांचल के कवि की है जो हिंदी साहित्य के इतिहास की मोतियों में गिरजा दत्त शुक्ल 'गिरीश' की बगिया के फूल, यमदग्नि की कर्मस्थली में जन्मा तथा आलम की केलियों में पला बढ़ा तथा अपने जीवन को एक आदर्श नागरिक की तरह शिक्षा में न्योछावर कर दिया। कवि ने अपने क्षेत्र में अनेकों विद्यालयों, महाविद्यालयों की स्थापना की। जो कि आज भी अपने गौरव से उदीयमान है।

कवि त्रिपाठी जी ने क्षेत्र विकास के कार्यों के साथ ही कृषक जीवन का भी निर्वहन किया है। उनकी कविता का एकमात्र अनूठा उदाहरण उनकी रचना धरती के गीत है। जो अपने नाम से ही वीर भोग्या वसुंधरा की पंक्ति को दोहराती है। कवि अपनी रचना में शहरी एवं ग्रामीण दोनों परिस्थितियों को उजागर किया है। कवि के द्वारा संचालित विद्यालय की अति जीर्ण शीर्णता का ही उद्वेग था कि आप मुंबई जैसे महानगर में जाकर अपनों का सहयोग मांगा तथा दोनों का समावेश कवि की इस कविता में दृष्टिगोचर होता है।

'' भवन की गति है करुणामयी
रूदन है करती वसुंधरा।
देख उसकी गति कुगति को
प्रत्येक जन में दुःख भरा।
समय तो अति भव्य पुनीत था
समिति का भी समर्थन प्राप्त था

किंतु विद्यालय महज कंकाल था
आज है साभार यह हर्ष है
पूरी हुई आराधना यह उत्कर्ष है।"

कवि अपने जीवन के संघर्षों को बयां करते हुए बड़े ही अनूठे अंदाज में कहता है।

हाय! ये जीवन हमारा है भरा संघर्ष से।
संतोष बस इतना ही है हारा नहीं अपकर्ष से।।

कवि ने अपने उन क्षणों को जीवन्त किया। जब उन्हें लगा कि यह संघर्ष हमें खुद लड़ना है।

होगा बड़ा अपवाद इसका जो सुनेगा यह कथा।
रथ छोड़कर हम भागते कुरुक्षेत्र बन जाने के बाद।
हे सखा पछताओगे कुछ दिन गुजर जाने के बाद ।।

समाज में अच्छे और बुरे दोनों प्रकृति के लोग होते हैं। जीवन उन्ही में जीना ही अपने में एक कला है। लेकिन कवि त्रिपाठी ने कहा कि

नहीं यह दिल कहता था कि ऐसे साथियों के साथ आऊं मैं
पिलाकर दूध का प्याला जहर का सांप पालू मैं।
मगर एहसास होता था कि मंजिल पार कर लूंगा।
लिखा तो नसीब में था कि गर्दीसे चांद चूमूगा।।

कवि कहता है कि यह उपवन मारीच का है। जहां पर हम शांन्ति, उन्नति एवं राममय संसार देखना चाहते हैं। इन सभी परिस्थितियों के बीच कवि की गंगा जमुनी तहजीब भारत के समृद्धि, यश, वैभव, शौर्य, चमक को पिरोती हुई कवि की यह पंक्तियां देश के प्रति प्राण न्योछावर करने के लिए आतुर कर देती हैं।

बढ़ते चलो ये वीरों कश्मीर है तुम्हारा,
देना पड़ेगा उसको देता है जो सहारा।
भगवान् मेरे मन में बस एक ही विचारा,
खिलती रहे ये कलियां हंस दे चमन हमारा।।

कवि को उर्दू शायरी का भी मुनासिफ इल्म जरूर था। उनकी इन पंक्तियों में उर्दू तहजीब बयां होती है।

मंजिलों को लूट लेना पर कारवां चलने तो दोगे।
छांव देना या न देना फूलने फलने तो दोगे।
अवरोध का मकसद है गोया, राह को बनने तो दोगे।
राह चलना या न चलना राही को चलने तो दोगे।
महफिले जमकर सजाना शाम कुछ ढलने तो दोगे।

खुदकुशी कर ले अंधेरा रोशनी जलने तो दोगे।
जश्न का दीपक जलेगा, घर अभी बनने तो दोगे।
दिल्लगी कहते त्रिपाठी, दिल्लगी करने तो दोगे।

जीवन पथ में कभी दुःख कभी सुख की अनुभूति होती है। ऐसी स्थिति में कवि ने कहा कि

दुःख शोक जो जब आ पड़े
सो धैर्य पूर्वक सब सहो।
होगी सफलता क्यों नहीं,
कर्तव्य पथ पर दृढ़ रहो।

कवि के मानस में जीवन की मधुर स्मृतियां ही उसकी शक्ति और प्रेरणा के स्रोत हैं। अपनी स्मृतियों के दर्पण में कवि ने अपना अतीत, वर्तमान और भविष्य देखा है। वह अपनी कविताओं में विभिन्न प्रसंगों में अपने जीवन संघर्ष के साथियों को विस्मृत नहीं कर पाता।

चाह नहीं कहीं राज मिले यह
चाह नहीं धन संपत्ति ख्याति।
चाह नहीं सुख स्वर्ग मिले
अस चाह नहीं भव मुक्ति सुहाती।
चाहत न कामिनी कंचन
चाह न व्यंजन भॉति– भॉति।
त्रिपाठी यही बस देव प्रभो वर
पीड़ित सेव करूं दिन राती। ।

कवि की कविता में बस उन असहयों की सेवा चित्रित है जो वास्तव में अपकर्ष, निंदा, कटुता, आलोचना, भेदभाव आदि से आहत है। एक मध्यमवर्गी ब्राह्मण कुल में उत्पन्न कवि यदि ऐसी विचारधारा से ओतप्रोत होकर कविता का सृजन करता है, तो वह वास्तव में प्रशंसनीय है।

युवा वर्ग हो या हमारे समाज का कोई भी जो आशा, विश्वास एवं सतत् संघर्ष से अपनी कर्मठता से किसी लक्ष्य की प्राप्ति करना चाहता है। तो कवि की ये पंक्तियाँ उसे ऊर्जा, जोश एवं ताकत प्रदान करती हैं।

जिंदगी का सफर शेष कितना अभी
यह न सोचो कि साथी चलेंगे सभी।
नित पढ़ो मार्ग में लक्ष्य रख सामने
प्राप्त होगी सफलता कभी न कभी।।

प्रस्तुत पुस्तक में भले ही शब्दों की जटिलता ना हो, पांडित्य न हो, दर्शनिकता के प्रचुर तत्व ना हो, छंदों की लड़ियां ना हो, किंतु कवि अपनी कविता से जीवन को जीता है, खेलता है,

हंसता है, मुस्कुराता है, गुनगुनाता हैं और एक दृढ संकल्प और नई ऊर्जा से अपने अल्हड़पन से सौ वर्षों तक जीता है। वही उसकी सफलता है।

अतएव इस धरती के गीत नामक पुस्तक से हर मानव को अपने से जोड़कर रखने की जरूरत है। वही मानव की असली संजीवनी है। अंत में किशोर दा कि वह पंक्तियां बरबस याद आ जाती हैं।

आ चल के तुझे मैं ले के चलूं इक ऐसे गगन के तले।

जहाँ गम भी ना हो, आंसू भी ना हो, बस प्यार ही प्यार पाले।।

समीक्षक
डॉ0 विनय कुमार त्रिपाठी

सम्पादक
शोधमार्तण्ड
प्राचार्य
श्री गौरीशंकर संस्कृत महाविद्यालय
सुजानगंज, जौनपुर (उ0प्र0)